समाजिक व्यवहार की विशेषता

एक समाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य का अधिकांश व्यवहार सामाजिक परिपेक्ष्य में होता है। प्रायः प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों की प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष उपस्थिति से कल्पना मात्र से प्रभावित होते रहता है। दूसरो की उपस्थिति में व्यक्ति का व्यवहार महत्वपूर्ण ढंग से परिर्वतित हो जाता है।

अतः दैनिक जीवन में प्रायः सभी ने यह अनुभव किया होगा कि अन्य व्यक्तियों के साथ रहने पर हम कुछ ऐसे व्यवहार कर देते हैं, जो उनकी अनुपस्थिति में हम न करते। सम्भवतया दूसरे व्यक्तियों की उपस्थिति मात्र ही हममे कुछ ऐसा मानसिक परिवर्तन उत्पन्न कर देती है, जिसके कारण समाजिक वातावरण को सामने और उसके प्रति अनुक्रिया से करने की प्रक्रिया परिवर्तित हो जाती है।

हम औद्योगिक श्रमिकों के सामाजिक व्यवहारों के उन पक्षों का वर्णन करेगे जो अन्य व्यक्तियों के समूह की प्रत्यक्ष उपस्थिति के कारण घटित होता है। ऐसे व्यवहार को व्यक्ति का "सामूहिक व्यवहार" कहा जाता है। सामूहिक व्यवहार से हमारा तात्पर्य किसी व्यक्ति के उन व्यवहारो से है जिन्हें वह किसी मानव समूह की उपस्थिति में कहता है।

समाजशास्त्र तथा सामाजिक मानवशास्त्र में सामाजिक व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। उदाहरणार्थ- किम्बल-यंग (Kimball young) के शब्दों में, "समाजशास्त्र समूह में मनुष्यों के व्वहार का अध्ययन करता है"। क्रच और क्रचफील्ड (Krech & Crutch field)के अनुसार "सामाजिक मनोविज्ञान दुसरी ओर समाज में व्यक्तियों के व्यवहार के प्रत्येक पहलू से सम्बन्धित है। अत: सामाजिक मनोविज्ञान की विस्तृत व्याख्या में व्यक्तियों के व्यवहार के विज्ञान के रूप में दी जा सकती है।"

समाज में व्यक्ति द्वारा किये जाने वाला व्यवहार समाजिक व्यवहार कहलाता है तथा इसी व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान समाजिक मनोविज्ञान है। इसी प्रकार अकोलकर (Akolker) के शब्दों में "समाजिक मनोविज्ञान समाज में व्यक्तियों का अध्ययन किया जाता है"।

वास्तव में मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते उससे समाज की मान्यताओं, आर्दशों तथा प्रत्याशाओं के अनुरूप व्यवहार की आशा की जाती है। उसका व्यवहार अनुचलन (Confomity) तथा विचलन (Deviance) दोनों में किसी भी प्रकार का हो सकता है। विचलित व्यवहार पर समाज सामाजिक नियंत्रण द्वारा अंकुश लगाता है। सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति वह व्यवहार सीखता है जो समाज की मान्यताओं व आर्दशों के अनुरूप होता है। सामाजिक मान्यताओं व आर्दशों का अन्तरीकरण व्यक्ति की समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से ही करता है।

सामाजिक व्यवहार के लिए दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होना जरूरी है। व्यवहार वास्तव में दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच अन्त:उत्तेजना (Inter-Simulation) का परिणाम होता है। व्यक्ति पारस्परिक अन्त:क्रियाओं के माध्यम से एक दूसरे को प्रभावित करते है तथा अन्त:क्रियाओं के माध्यम से एक दूसरे को प्रभावित करते है तथा अन्त:क्रियाओं की निरन्तरता तथा निश्चित परिणाम को प्रक्रिया कहते है। अत: सहयोग, संघर्ष, प्रतियोगिता, व्यवस्थापन, अनुचलन, विचलन सभी सामाजिक व्यवहार से सम्बन्धित है। व्यक्तियों का व्यवहार जन्म से प्राप्त मूल प्रवृत्तियों तथा सामाजिक व्यवहार से सम्बन्धित है। व्यक्तियों का व्यवहार जन्म से मूल प्रवृत्तियों तथा समाज जनित अभिप्रेरणाओं द्वारा प्रेरित होता है।

मैकडूगल (McDougall) के अनुसार सम्पूर्ण मानव व्यवहार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मूल प्रवृत्तियों द्वारा ही संचालित होता हे। इनके शब्दों में, "मूल प्रवृत्तियाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में मनुष्य के समस्त व्यवहारों की प्रमुख चालक है। ये संवेग की मानसिक शक्तियाँ है जो व्यक्तियों एवं समाजों के सम्पूर्ण जीवन का निर्माण करती है और उसे बनाये रखती है।"

सामाजिक व्यवहार की विशेषताएं निम्न हैं:-

सामाजिक व्यवहार की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताये होती है -

(1) **समाजिक व्यवहार सीखा हुआ व्यवहार है** - मानव समाज में सामाजिक व्यवहार एक सीखा हुआ गुण है न कि पेतृकता द्वारा प्राप्त लक्षण। समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से जो व्यवहार सीखा जाता है उसी को सामाजिक व्यवहार कहा जाता है।

(2) **संस्कृति द्वारा निर्धारित** - सामाजिक व्यवहार संस्कृति द्वारा निर्धारित होता है। प्रत्येक समाज की संस्कृति यह निर्धारित करती है कि कोन सा व्यवहार वांछनीय अथवा अवांछनीय है। इसीलिए भिन्न प्रकार की संस्कृतियों में व्यवहार की भिन्नता पाई जाती है।

(3) **सामाजिक व्यवहार अभिप्रेरणात्मक व्यवहार है** - सामाजिक व्यवहार अभिप्रेरणाओं द्वारा संचालित होता है इसमें जन्मजात अभिप्रेरणाये (Inhate- Motives) तथा अर्जित

(Achieved) या समाज-जनित (Sociogenic) अभिप्रेरणाओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

(4) **पारस्परिकता** - सामाजिक व्यवहार व्यक्ति द्वारा शून्य में नहीं जाता अपितु इसके लिये अन्य व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। अत: उत्तेजना (Inter-Stimulation) व्यवहार के निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

(5) **जटिलता** - सामाजिक व्यवहार की प्रकृति जटिल होती है। यह आवश्यकताओं, जन्मजात अभिप्रेरणाओं, समाज-जनित, अभिप्रेरणाओं, पर्यावरण, संस्कृति इत्यादि से इस प्रकार जुड़ा हुआ होता है कि इसके समझना इतना सरल नहीं है। जटिल प्रकृति के कारण ही आज भी अधिकांश लोग इसे समझने में लगे हुए हैं।

(6) **परिर्वतन प्रकृति** - सामाजिक व्यवहार में गत्यात्मकता पाई जाती है अर्थात् इसकी प्रकृति प्ररिवर्तनशील होते रहता है। कुछ विद्वानों का कहना है कि परिर्वतनशील प्रकृति के कारण ही सामाजिक व्यवहार का वेज्ञानिक अध्ययन नहीं किया जा सकता है।